सं० श्रो०वि०/पानी/29-85/10068.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि में अपुर रव्बड़ इन्टरप्राईजिज 71/3 माईल स्टोन जी दी दो करनाल के श्रमिक श्री जनार्दन पाण्डे, पुत्र श्री केंद्रार पाण्डे, मार्फत श्री जंगवहादुर यादव, डी० बी० 150 चार चमन करनाल तथा प्रवन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विदाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिवित्यम, 1947 की धारा 10 की उपश्वार (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा उक्त श्रिधित्यम की धारा 7-क के श्रधीन गठित श्रौद्योगिक श्रीधकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीमकों के वीच या तो विवादग्रस्त मामला/मामले हैं अथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं:---

क्या श्री जनार्दन पान्डे की सेवाओं का सभापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस <mark>राहत</mark> का इकदार है ?

सं ग्रो वि /पानी /31-85 / 10076. — पूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं अपूर रख्वड़ इन्टरप्राईजिज 71/3, माईल स्टोन, जी टी. रोड़, करनाल, के श्रमिक श्री राजिकशोर, पुत्र श्री देशों वली, मार्फत श्री जंगबहादुर यादव, डी. बी. 150 चार चमन, करनाल तथा प्रधन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

भीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रव, ग्रीबोगिक विवाद ग्रीधिनयम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खंड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त ग्रीधिनयम की धारा 7-क के ग्रीधीन गठित औद्योगिक ग्रीधिकरण, हरियाणा, फरीदावाद, को नीचे विनिर्दिष्ट सामले जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला/ मामले है ग्रथवा विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला/मामले है न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं।

क्या श्री राजिक शोर की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? सं शो० वि०/श्रम्बाला/28-87/10113.—चूं कि हिरयाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० मोडल प्रिटिंग प्रैस (इण्डिया), प्रा० लि०, इण्डस्ट्रेंग्यल एरिया, जगाधरी रोड़, श्रम्बाला छावनी के श्रमिक श्री जगत सिंह, मार्पत श्री इन्द्रसैन बसल, छत्ता नालागिष्ट्या, जगाधरी, जिला श्रम्बाला तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीचोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिध्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियोणा के राज्याल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं० 3(44) 84-3-श्रम, दिनांक 18 श्रप्रैल, 1984, द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्वाला को विवाद प्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिण्य एवं पंचाट तीन मास में देने हेत् निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री जगत सिंह की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, ती वह किस राहत का हकदार है ?

## दिनांक 10 मार्च, 1987

सं० ग्रो० वि० /कुरुक्षेत्र/36-87/10292--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० (1) मैनेजर, दी बोरीपुर कोपरेटिव केंडिट कम-सर्विस सोसाईटो लि०, बोरीपुर (कुरुक्षेत्र) (2) श्री जागीर सिंह, पुत्र श्री झाण्डा सिंह प्रधान, दी बोरीपुर कोपरेटिव केंडिट -कम-सर्विस सोसाईटी लि०, बोरीपुर (कुरुक्षेत्र) के श्रीमक श्री रमेश सिंह, पुत्र श्री मान सिंह, गांव बोरीपुर डाक खाना कल्याणा तहसील थामेसर जिला कुरुक्षेत्र तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायिनिर्णय हेतु निरिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, श्रब, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हिरियाणा के राज्यपाल इसके हारा सरकारी अधिसूचना स. 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 प्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के श्रप्रीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नी वे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मात्र में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुपंगत श्रपत्रा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री रमेश सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?